Page No.
Date 18/7/21

हरिहर काका

1. इस पाठ में आस्था के प्रतिक धर्म-स्थानों और धर्म-ध्वजा धारकों (अर्थात धर्म के ठेकेदारों) की स्वार्थी प्रवृत्तियों को उजागर किया गया है। यह कहानी पारिवारिक संबंधों में भ्रातृभाव को कुचलती, बेदखल करती हुई तथा पाँव पसारती जा रही स्वार्थ लोलुपता तथा धर्म की आड़ में फलने-फूलने वाले कुकर्म तथा हिंसावृत्ति जैसे यथार्थ सत्य को अनावृत करती है। बदलाव के नाम पर आम लोगों के शोषण के तरीके बदल गए हैं। आज़ादी के बाद ग्रामीण जीवन वास्तव में कितना भयावह और जटिल हो गया है।

हरिहर काका एक वृद्ध और निःसंतान व्यक्ति है। वैसे तो उनका संयुक्त परिवार है, लेकिन उनकी बीघे ज़मीन के कारण ही इनके रिश्तों में दरार पड़ी है। गांव के लोग कुमार्ग पर न चले, इसकी शिक्षा देने के लिए ठाकुरबारी है। लेकिन हरिहर काका के लिए परिवार और ठाकुरबारी दोनों ही काल और विकराल बन जाते हैं। हरिहर काका कि चिंता न परिवार को है और न ही ठाकुरबारी के महंथजी को।